जगदम्ब अहाँ अबलम्ब हमर





भवानी प्रकाशन
पटना-800 006

जगदम्ब अहीं अबलम्ब हमर

रचियता
श्री प्रभु नारायण झा 'प्रदीप'
प्रशिक्षित एम०ए०, साहित्यरत्न
कथवार, दरभंगा

प्रकाशक
भवानी प्रकाशन
गांधी निवास, सैदपुर, पटना-4

चतुर्थ संस्कारण

प्रति संस्करण-1000

मूल्य : ३.०० टका मात्र

मुद्रक : त्रिदेव स्क्रिण प्रिन्टर्स, सैदपुर, पटना-८00 004

विषय-सूची






१. हे माय अहाँ बिनु आश ककर

जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर,
हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
जँ माय अहाँ दुःख नहि सुनबई,
तँ जाय कहू ककरा कहबइ ?
करू माफ जननि अपराध हमर,
हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
हम भरि जग सँ ठोकरायल छी,
माँ अहिंक शरण मे आयल छी,
देखू हम पड़लहूँ बीच भंवर,
हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?
काली - लक्ष्मी - कल्याणी छी,
तारा - अम्बे - ब्रह्माणी छी,
अछि पुत्र 'प्रदीप' बनल टूगर,
हे माय अहाँ बिनु आश ककर ?








२. कयल जखन तुअ ध्यान

अहाँक चरण-रज जे सिर धारल, पाओल पद निर्वाण ।
जकरा अहाँक सदय: दृग भेटल, से बनि गेल महान ।।

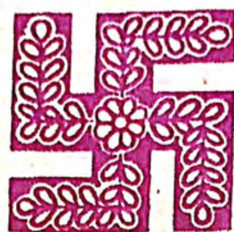
युग-युग धरि तुअविनत सकल जनकण-कण छन-छन जागे,
जे शरणागत बनि ढिग आयल तकर सकल भय भागे,
अहांक सिनेह-सुरभि जे पाओल, तेजल सकल अभिमान ।।

दक्षिण कर सेबक सिर राखल भागल ऋपुक तरासे,
बामहाथ जेहि माथ सुशोभित कुमतिक कयल गरासे,
लह-लह जीह म्हूं सँ भीजल, कयल अमिय जग दान ।।

अहांक प्रकाश, प्रकाशित भूतल सुतल जड मतिमंदे,
जननि अहांक ज्योति जग पसरल टूटल दुर्दिन फंदे,
प्रदीपक नयन अहांक द्युति देखल कयल जखन तुअ ध्यान ।।





३. कोरा मे उठा ले

लाल छउ लिलोह माँ करेज लगा ले, कोरा मे उठा लें
दुनिया मे अपन आर के हेतई ?
जे किछु अपराध हमर बिसरि जाउ मैया,
भव-समुद्र मे डूबैछ आई हमर नैया ।
नेह - नाव पर चढ़ा किनार लगा दे,
कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपन...
प्रेम के पियास लेने देख कियो एलउ,
माय-माय करैत कियो चरण मे लोटेलउ,
चरण के नहि झाड़ माय शरण लगा ले-
कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपना...
स्नेह बिनु 'प्रदीप' केर मिझा ने जाइक बाती
कहतइ के, माय छउ कठोर तोहर छाती,
हम अन्हार मे उदार ज्योति देखा दे,
कोरा मे उठा ले, दुनिया मे अपन....







४. जननि पूर्णकामा

कतऽ छी, हे अम्बे, श्रबण-चक्षु मुनने,
दशा की न देखी। सुनई छी ने अपने ?
हमर दुर्दशा की अहाँ नई दैखई छी।
हमर ई व्यथा की अहां नई बुझई छी।
जगत ब्यापिनी की जंनई छी न अपने, दशा की न देखी....
सुनल अछि कतेको कथा माँ दया के,
सुनल अछि अनेको अमर कीर्ति माँ के,
शरण मे एलउँ तें, सम्हारू ने अपने। दशा की न देखी...
धरणि सँ गगन धरि अहिंकेर माया,
अहिंकेर सुधा सँ बनल शुभ्र काया,
तखन मंजुषा कोन छी नेह रखने। दशा की न देखी ...
अहाँ के शरण मे न जतेऽ जीव आयल,
तकर कष्ट सभटा छने में बिलायल।
हमर बेर अम्बे रहल शेष तपने। दशा की न देखी...
परीक्षा कते लैत रहबैक माया।
प्रतीक्षा कते दिन करत तुच्छ काया।
हमर जन्म अम्बे बनेलउ कि सपने। दशा की न देखी...
जपई छी सदा हम अहि केर नामें...
जननि 'पूर्णकामा' शिवे, श्याम-श्यामे।
प्रदीपक प्रभा, आब राखू ने झँपने। दशा की न देखी...









५. नहि पाओल पार

जनम जनम केर थिकहु चिन्हार,
जननि अहांक नहि पाओल पार ।।
जे जननि सभ दुख हरि लेल,
तनिक अपरिचित हम बकलेल ।
बिगड़ल के नित कएल सुधार ।। जननि...
नचलहु जें नटवर केर संग,
छिलकि जटा वनलहु माँ गंग ।।
पाप विमोचनि सुरसरि धार ।। जननि...
जनम-जनम बहुतो दुःख भेल,
गरभ जोगाओल ककरा लेल ।
कहिया करब दुःख नदिया सँ पार ।। जननि...
तेज भरल दृगतेसर दीप,
हम अनुखन जड़ि भेलहु 'प्रदीप'
करब कखन माँ हमर उद्धार ।। जननि...







६. आब ककरा शरण हम जेबई ?

तों ने सुनमे हमर बात मैया, फेर ककरा ब्यथा हम सुनेबई ।
छोड़ तोहर चरणकेर आशा, आब ककरा शरण हम जेबई ?

हम छी तोरे दया केर भिखारी,
आन करतई हमर के पुछारी ?

स्नेह-सागर तोहर जँ सुखेतई भऽ जेतइ सगरो दुनिया भिखारी।
हम तोरे नामकेर लेल माला आब दोसर ककर नाम लेबई ।

छउ पसारल तोरे सबटा माया
माटि पानिक बनल तुच्छ काया
जीव-जन्तुओ जगत केर जते छई
भेटि रहलइ तोरे सभके छाया

जँ एतेटा तोही माँ बनौले आब बेटा ककर हम कहेबई ?

हम भने होइ केहनो जँ पापी
पापनाशिनी तोंही माँ प्रतापी
स्नेह जा धरि तोहर भेट रहलई
हम प्रदीपे बनल जग मे ब्यापी

छथि जकर माय 'सर्वेश्वरी' माँ, फेर टूगर केना से कहेतई ?
तों ने सुनमे हमर बात मैया, फेर ककरा ब्यथा हम सुनेबई ?








७. आबहु नयन उघारू

जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ आबहु नयन उघारू ।
जँ कतबो पापी हम, तइयो बेटा बूझि उबारू ॥
जगक प्रपंच विषय-ईर्ष्यादिक बनल हमर अछि साथी,
मद-ममता जड़ता सबसँ अछि घेरल बेढल छाती,
लोभ-घृणा केर उदधि सँ जल्दी पार उतारू ।
जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ ॥
क्षूद्राशा तृष्णा केर वश मे फंसि रहलहु दिन-राति,
अहाँक सिनेह नेह बिनु अम्बे जड़त न दीपक बाती,
जननि ज्योति दय आइ हृदयकेर तमकुहेशकें फारू ।
जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ ॥
जग कहइत अछि काली-कारी यद्यपि सिनेहक लाली,
'प्रदीप' कहए माँ तारा-तारा जगक विपति सब टारू।
जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी माँ आबहु नयन उघारू







८. हमरा किऐक तबाही

जननि हे, कतेक भेलहुँ अपराधी !
अहिंक चरण हम नितदिन सुमिरल ।
किए रहलहुँ अछि साधि । जननि हे०
आनक शरण कतहु नहि गेलहु,
अहिंक चरण रज माथ चढेलहुँ,
किए रखलहुँ दृग बांधि । जननि हे०
अहिंक कृपा बल सब जन पबइछ,
अन्नपूर्णा कहि सब गुण गबइछ,
रहलहु हमहुँ आराधि । जननि हे०
माँ, माँ, माँ, कहि सुमिरल अम्बे,
जननि अहाँ जनि करिअ विलम्बे,
दिअ दुर्गुण सब टारि, जननि हे०
जे जन थोड़बहु अहाँ के मनओलक,
से ओतबहि मे सब किछु पओलक,
हमरा बेर बताहि । जननि हे०
अर्थ पिपासुक लम्पट लोभी,
आई चतुर्दिशि दुर्मति क्रोधी,
खुजइछ सभतरि खाधि । जननि हे०
दुर्गे दुर्गति नाशिनी अम्बे,
काली कालजयी जगदम्बे,
हरू प्रदीपक सब ब्याधि । जननि हे०
कतेक भेलहु अपराधी ?





९. आधार अहींटा छी

माँ अहाँक चरण तेजी जाउ कत ?
हम आनक दास कहाउ कत
छी जगत जननि, जगदम्ब अहाँ-
हम आनक पुत्र कहाउ कहाँ
सब कयल समर्पित अहिंक एत ?
माँ अहांक चरण तेजि जाउ कत
सब शक्ति अहीं मे अछि अम्बे,
छी अहीं जगत के अबलम्बे,
सब देवी-देव रहैछ जत।।
आधार अहीं टा छी सब के
साकार करइ छी माँ जगकेँ,
शरणागत तखान कहाउ कत।।
दिनकरक प्रकाश अहीं माँ छी,
जल विद्युत शक्ति अहीं माँ छी ।
हम दीव्य 'प्रदीप' कहाउ कत ?
माँ अहाँक चरण तेजि जाउ कत ? ।।




१०. सकल चराचर तोरे बस

तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ।
युग-युग धरि जगत केर जन शंतान कहेतउ गे ॥
तों सबहक सुधि लैत रहइ छें
तोही जननि महान गे ।
तोरा छोड़ि अपन एहि जगमे,
होयत हितैषी आन के ?
अपराधक जे दण्ड देमे सुत सभटा सहतउ गे ।
तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ॥
तों लक्ष्मी, काली, तारा, वाणीमा ब्रह्माणी ।
श्यामा सीता, सहृदय धारिणि, हरतिय कल्याणी ।
सकल चराचर तोरे बस मे छउ आ रहतउ गे ।
तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ॥
बगलामुखी, भैरवी, गौरी,
विश्व सुन्दरी, माया ।
कमला, कला, कौशिकी, गंडक,
गंगा कण-कण जाया ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति तोरे सँ पेतउ गे ॥
तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ॥
शृष्टि धारणी प्रलय कारिणी,
जग पालिनी, जग माता ।
तोरा सँ बढि भ ने सकइए,
कियो जगत मे दाता ।
निसिदिन तोहर 'प्रदीप' अम्ब तोरे गुण गेतउ गे ।
तोहर सिनेह सुरभि पा पुत्र लिलोह न हेतउ गे ।








११. ककरा मनाबी

अहाँ केर चरण तेजि ककरा मनाबी !
अहाँ जँ ने सुनवई तँ ककरा सुनाबी ।
कहइये कते लोक ढोंङी-फरेबी,
कहइये कियो अंध विश्वास सेवी ।
कियो इहो कहि दैत अछि मैया वादी ।
चराचर जते सब अहीं सँ पलैये,
अहींक शक्ति सँ अम्ब जगत चलैये।
सुरभि माँ अहीं सँ सदति काल पाबी।
कतऽ अछि भवन अम्ब केहिठां बसेरा,
कियो ने जनैये अहांक श्रृष्टि फेरा,
चलइ छी जत सँ ओतहि फेर आबी।
अनेरे अपन नाम राखल प्रदीपे,
सदत्त खान रहइछी अन्हारक समीपे,
अहींक आश-विश्वास मन मे बसाबी ।
अहाँ केर चरण तेजि ककरा मनाबी ।




१२. रह न सकब ढहलेल

हे गइ माँ न रहब बकलेल ।
तोड़ा छोड़ि हमर के दोसर
के सोचत एहि लेल ।
तोहर बेटा करत गऽ ककरा
चरण कमल सँ मेल ।। हे गइ माँ
तो सबहक सुधि लैत रहइ छें,
ई जग तोरे खेल ।
मुनेलें नेत्र किएक माँ तों गे
एबरूक हमरा बेर । हे गई माँ
अपराधे तँ करी सदा हम
सभठाँ बेरम बेर ।
जानि बूझि तों माफ केलें माँ
बिनु कहने कए-बेर ।
आब किएक तों रूष्ठ, हेगे माँ
अदना बूझि अनेर ।। हे गे माँ
तोरे ज्योति प्रदीप बनौलक
तखन कोना हम टूगर ।
तोहर पुत्र कहबितौं माँ गे
कोना रहब हम टूगर ।
दयामयी, जग जननी केर सुत,
रहि न सकत ढहलेल ।। हे गे माँ





१३. तों नै बिसरिहें

तों नै विसरिहि हें गे मे,
तो जँ बिसरमे तऽ दुनिया मे बड़तइ बौए ।
तोरा बेटा कें तोरे टा आशा,
तोरा बिना छई ने ककरो भरोसा ।
कोरा सँ ने दिहें बइलेऽ,
तों जँ बिसरमे तँ दुनिया मे परतइ बौए ।।
कतबो अनठेमे पछोर नहि छोड़बउऽ,
तोरे चरण सँ सिनेह अपन जोड़बउ ।
बेबुझ मे दिहें बुझेऽ,
तो जँ बिसरमे तँ दुनिया मे पड़तई बौए ।
स्वारथ भरल संसारे ई सगरो,
कियो ने कानब सुनई छई ककरो ।
जाउक ने प्रदीपो मिझे,
तों जँ बिसरमे तँ दुनिया मे पड़तई बौए ।।








१४. धरण बनल सुरधाम

मिथिलाक धिया सिया,
जगत जननि भेली ।
धरण बनल सुर धाम हे ।
जन्य मिथिक भूमि,
धर-धर ऋषि-मुनि ।
दुलहा जगतपति राम हे।
कमला बहथि जतऽ जीबछ बहथि, ततऽ
कोशी-गंगा-गंडक के बथान हे ।।
हिम-गिरि केर धर गौरीक नइहर ।
शिवजी भेलाह मेहमान हे ।।
यज्ञ सँ तपल एकर कण-कण शुचि,
प्रदीपक जन्म स्थान हे ।।








१५. कहबनि अपना मइया कें

बाब जँ ठोकरेथिन सबटा कहबनि अपना मैया कँ ।
मैया तों जँ ठोकरएमे तँ ककरा कहबई, सुनतई के ?
बेटा करए मुकदमा दायर
अपना माइक कोट मे
बाबा तोरा हरादेब हम माइक नेहक बोट मे ।
माफ न गलती कैलहुँ बाबा छोट तनय अज्ञानी कें,
मैया माफ न करती, बाबा अहांक एहि मनमानी के ।
तों विश्वम्भर भने कहाबऽ
हम नहि देब मोजर हौ,
जा धरि तों ने देखयबऽ बाबा रूप तोहर जे औढर हौ ।
विश्वम्भरी जननि हमरो छथि, तोरो हुनके शक्ति हौ,
तैयो चाहि रहल छह बाबा आइ प्रदीपक भक्ति हौ ।
धन्य अहीं छी बाबा जग मे
अहिंक थीक संसार यौ
मैया रहती संग सदा, तँ करबइ बेरा पार यौ ॥







१६. अढरण ढरण

अढरण–ढरण थिकहु शिव दानी,
बेर हमर कत गेलहु मशानी ॥
सिर पर शशि–फणि, सुरसरि धार,
कंठ सोभए रूद्राक्षक हार ।
सदिखन संगहि सदय भवानी ॥ बेर हमर
आसन–वसन मृगा केर खाल,
सुन्दर पाँच विभूतिम भाल ।
तीन नयन सेहो चमकए चानि ॥ बेर हमर
हेम शिखर पर कलहुं बास,
बसहा सेवक, बाघ खवाव
काल जयी काली कल्याणी ॥ बेर हमर
भोजन भाङ, धथुर बेलपात,
पीसथि जननि गौरी साझ परात ।
अहिंक कृपा बल जिवइछ प्राणी । बेर हमर
तेसर नयन जड़य जनु दीप,
हम जड़ि–जड़ि नित, भेलहु 'प्रदीप'
चरण लोठएलहु हम कानि–कानि ॥
बेर हमर कतए गेलहू न जानी ॥